International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(6): 16-18

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(6): 16-18
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 06-09-2017
Accepted: 07-10-2017

डॉ. वेदप्रकाश मिश्र
प्रोफेसर, संस्कृत विभागाध्यक्ष,
डॉ.सी.वी.रामन्विश्वविद्यालय
करगीरोड कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

उमा सिंह चन्देल
पी–एच.डी. शोध छात्रा,
डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय,
करगीरोड कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

Correspondence
डॉ. वेदप्रकाश मिश्र
प्रोफेसर, संस्कृत विभागाध्यक्ष,
डॉ.सी.वी.रामन्विश्वविद्यालय
करगीरोड कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

अध्यात्म रामायण में वर्णित ऋषि आश्रम

डॉ. वेदप्रकाश मिश्र, उमा सिंह चन्देल

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र में ''अध्यात्म रामायण में वर्णित ऋषि आश्रम'' का विवरण प्रस्तुत किया गया है।
पूर्वकाल में ऋषि, मुनि वनों एवं पर्वतों में तप करने तथा निवास करने हेतु जिन स्थलों में रहा करते थे उन्हे ही तपोवन या आश्रम कहा जाता था। इन आश्रमों में ऋषि मुनीलोग जप–तप, ध्यान, यजन, हवन इत्यादि किया करते थे। इनमें से कुछ आश्रम गुरूकुल भी हुआ करते थे। जहां दूर–दूर से विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आया करते थे। प्रकृति के बीच बसे हुए ये आश्रम अत्यंत रमणीय होते थे। इन्हीं आश्रमों में ज्ञानी ऋषि मुनि, धर्म कर्म के नियमों को बनाया करते थे, मूलरूप में ये आश्रम ही भारतीय संस्कृति के नियामक हुआ करते थे।
अध्यात्म रामायण में भी ऋषि आश्रमों का वर्णन है जो इस प्रकार है–

कुट शब्दः रामायण, ऋषि आश्रम, धर्म कर्म

प्रस्तावना

वसिष्ठ आश्रम

महर्षि वसिष्ठ ब्रह्माजी के मानस पुत्र थें। वे महान तपस्वी एवं ब्रह्मवेत्ता थे। महर्षि वसिष्ठ राजा दशरथ के कुलगुरू थे। अध्यात्म रामायण में महर्षि वसिष्ठ के आश्रम का वर्णन प्राप्त होता है। यह आश्रम अयोध्यापुरी राज्य में सरयूनदी के तट पर था। वह वृक्षों तथा लताओं से व्याप्त था। देवों और गन्धर्वों तथा किन्नरों से वह आश्रम शोभित था।

> उपनीता वसिष्ठेन सर्वविद्या विशारदाः।
> धनुर्वेदे च निरताः सर्वशास्त्रार्थवेदिनः।।[1]

उपनयन संस्कार के बाद राम–लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न चारों भ्राताओं ने गुरू वसिष्ठ से समस्त शास्त्रों और धनुर्वेद आदि की शिक्षा प्राप्त की थी। यह आश्रम ब्रह्मलोक के समान मनोरम था। ऋषि वसिष्ठ समस्त ऋषि आश्रमों के कुलाधिपति थे।

विश्वामित्र आश्रम

अध्यात्म रामायण में महर्षि विश्वामित्र के आश्रम का उल्लेख मिलता है भारत के दक्षिण दिशा में ताटकावन के निकट विश्वामित्र का आश्रम था। ताटकावन में विचरण करने वाले दानवों तथा राक्षसों से त्रस्त विश्वामित्र ने महाराज दशरथ से अपने यज्ञ की रक्षा हेतु श्री राम और लक्ष्मण को अपने साथ ले जाने के लिए कहते हैं –

> अतस्तयोर्वधार्थाय ज्येष्ठं रामं प्रयच्छ मे।
> लक्ष्मणेन सह भ्राता तव श्रेयो भविष्यति।।[2]

अर्थात विश्वामित्र राजा दशरथ से कहते हैं कि आप अपने ज्येष्ठ पुत्र श्री राम को भाई लक्ष्मण सहित मुझे दे दो ताकि वे यज्ञ मे विघ्न डालने वाले राक्षशों का वध कर सकें इससे आपका भी कल्याण होगा और हम अपना यज्ञ निर्विघ्न पूर्ण कर सकेगें इसी आश्रम मे विश्वामित्र ने श्रीराम और लक्ष्मण को देवों द्वारा निर्मित दो विद्यायें दी –

> ददौ बलां च अतिबलां विद्योद्वे देव निर्मिते ।
> ययोर्ग्रहणमात्रेण क्षुत्क्षायादि नजायते।।[3]

अर्थात ऋषि विश्वामित्र ने श्रीराम को देवों द्वारा बनायी गयी बला और अति बला नामक दों विद्यायें दी जिससे क्षुधा और दुर्बलता आदि की बाधा नही होती।

गौतम आश्रम

अध्यात्म रामायण के बालकाण्ड के पंचम सर्ग में मुनिश्रेष्ठ गौतम के आश्रम का वर्णन है। इस आश्रम में महर्षि विश्वामित्र के साथ श्रीराम और लक्ष्मण पधारे थे। यह आश्रम गंगाजी के निकट स्थित था –

> गौतमस्याश्रमं पुण्यं यत्राहल्यास्थिता तपः।
> दिव्यपुष्पफलोपेतपादपैः परिवेष्टितम्।।[4]

गौतम ऋषि का पवित्र आश्रम दिव्य और पवित्र फलों वाले वृक्ष और लताओं से घिरा हुआ था। जिसमें मृग और पक्षी विचरण कर रहे थे। इसी आश्रम में शापित अहिल्या तप कर रही थी। जिसका उद्धार श्रीराम ने किया।

भरद्वाज आश्रम

अध्यात्म रामायण के अयोध्याकाण्ड के छठवें सर्ग में भरद्वाज मुनि के आश्रम का वर्णन है। वनवासकाल में श्रीराम, सीता और लक्ष्मण के साथ निषादराज गुह के द्वारा नौका से गंगा नदी को पारकर शरभंग मुनि के आश्रम पहुँचते हैं। भरद्वाज मुनि का आश्रम स्वर्ग सदृश था। यह आश्रम यमुना नदी के तट पर था। यह पवित्र आश्रम भरद्वाज मुनि की तपोभूमि थी। भरद्वाज मुनि को श्रीराम की उपासना द्वारा ज्ञान दृष्टि प्राप्त थी –

> अनुग्राह्यास्त्वया ब्रह्मन्वयं क्षत्रिय बान्धवाः।
> इति सम्भाष्य तेडन्योन्यमुषित्वा मुनिसन्निधौ।।[5]

इसआश्रम मेंभरद्वाज के अनुग्रह करने पर दोनो क्षत्रिय राजकुमार तथा सीता मुनि के अतिथि बने थे।

वाल्मीकि आश्रम

चित्रकूट पर्वत के समीप वाल्मीकि आश्रम था –

> नानामृगाद्विजाकीर्ण नित्यपुष्पफलाकुलम्।
> तत्र दृष्टवा समासीनं वाल्मीकि मुनिसत्तमम्।।[6]

ऋषिगणों, नानामृगों, पक्षियों से तथा सदा फल–फूलों से परिपूर्ण रहता था। वनवास काल में भगवान् राम, लक्ष्मण और सीता के साथ महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में ठहरे थे। वाल्मीकि मुनि के आश्रम में ही आदिकाव्य रामायण की रचना आदिकवि के द्वारा की गई। इसी आश्रम में सीता के दो पुत्र उत्पन्न हुए। मुनि ने उनमें से बड़े का नाम कुश और छोटे का नाम लव रखा। वाल्मीकि जी ने उन दोनो बालकों को सम्पूर्ण रामायण काव्य पढ़ाया था।

अत्रि आश्रम

अध्यात्म रामायण के अयोध्या काण्ड के नौवे सर्ग में अत्रि ऋषि के आश्रम का वर्णन मिलता है –

> अन्वगात्सीतया भ्रात्रा ह्यत्रेराश्रममुत्तमम्।
> सर्वत्र सुखसंवासं जनसम्बाध वर्जितम्।।[7]

नाना प्रकार की कन्दराओं, वृक्षों तथा लताओं से आच्छादित और पशुओं तथा पक्षियोंसे सेवित था। अत्रि ऋषि का यह उत्तम आश्रम था और सभी प्रकार से सूखपूर्वक रहने योग्य था। यह पवित्र आश्रम चित्रकूट पर था, जो ऋषि मुनियों की तपः स्थली माना जाता था।

शरभंग आश्रम

अध्यात्म रामायण के अरण्यकाण्ड के द्वितीय सर्ग में शरभंग आश्रम का वर्णन है –

> विराधे स्वर्गते रामो लक्ष्मणेन च सीतया।
> जगाम शरभंगस्य वनं सर्वसुखावहम्।।[8]

वनवास काल में विराध वध के पश्चात् श्रीराम लक्ष्मण और सीता के साथ शरभंग मुनि के सर्वसुखदायक आश्रम पधारे थे। मुनिवर शरभंग ने कन्द–मूल फलादि से उनका आतिथ्य सत्कार किया। शरभंग मुनि का पवित्र आश्रम दण्डकवन में था। यहां पर शरभंग मुनि ने तपस्या से प्राप्त पुण्य श्रीराम को समर्पित कर मोक्ष पद प्राप्त किया।

सुतीक्ष्ण आश्रम

अध्यात्म रामायण के अरण्यकाण्य के द्वितीय सर्ग में सुविख्यात सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम का वर्णन है। शरभंग आदि ऋषियों केआश्रमों से क्रमशः आगे बढ़ते हुए श्रीराम सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम पर पहुँचे –

> सुतीक्ष्णस्याश्रमं प्रागात्प्रख्यातमृषिसंकुलम्।
> सर्वर्तुगुणसम्पन्नं सर्वकालसुखावहम्।।[9]

सुतीक्ष्ण मुनि का प्रसिद्ध आश्रम था जो ऋषियों से भरा हुआ रहता था। वह समस्त ऋतुओं के गुणों से युक्त और सब प्रकार से सुखदायक एवं निवास के लिए अनुकूल था। अगस्त्य ऋषि के शिष्य सुतीक्ष्ण राम–मन्त्र के उपासक थे। श्रीराम ने यहां कुछ काल व्यतीत किये थे।

अग्निजिव्ह आश्रम

अध्यात्म रामायण के अरण्यकाण्ड के तृतीय सर्ग में अग्निजिव्ह मुनि के आश्रम का वर्णन हैं श्रीराम, लक्ष्मण और सीता सहित, मुनि सुतीक्ष्ण के साथ इस आश्रम में पधारे थे।[10]
मुनि अग्निजिव्ह का यह आश्रम अगस्त्य मुनि के आश्रम से कुछ दूर पर ही था। अग्निजिव्ह मुनि का आश्रम भी पवित्र तपः स्थली थी। जहां मुनि तप किया करते थे।। वह आश्रम नाना प्रकार के फल–फूलों एवं कन्द मूलो से युक्त था। अग्निजिव्ह अगस्त्य मुनि के छोटे भाई थे तथा राम नाम के उपासक थे।

अगस्त्य आश्रम

अध्यात्म रामायण के अरण्यकाण्ड में अगस्त्य मुनि के आश्रम का उल्लेख है। अगस्त्य ऋषि के आश्रम की छटा ही अनूठी थी –

> सर्वर्तुफलपुष्पाढ़यं नानामृगगणैर्युतम्।
> पक्षिसंघैश्च विविधर्नादितं नन्दनोपवनम्।।
> ब्रह्मर्षिभिर्देवर्षिभिः सेवितं मुनिमन्दिरैः।
> सर्वतोडलंकृतं साक्षात् ब्रह्मलोकमिवापरम्।।[11]

यह आश्रम समस्त ऋतुओं के फल और पुष्पों से परिपूर्ण, विविध वन्यपशुओं से सेवित तथा विभिन्न प्रकार के पक्षियों से गुन्जायमान नन्दनवन के समान सुशोभित था। यह आश्रम ब्रह्मर्षियों और देवर्षियों से सेवित था उस आश्रम के चारों ओर उस ऋषियों के आश्रम थे जो यहां तप किया करते थे। इस प्रकार अगस्त्य मुनि का आश्रम साक्षात् दूसरे ब्रह्मलोक के समान जान पड़ता था।
वनवासकाल में श्रीराम, लक्ष्मण एवं सीता के साथ इस सुन्दर आश्रम में पधारे थे। अगस्त्य मुनि श्रीराम के अनन्य उपासक थे।

मतंग आश्रम

ऋष्यमूक पर्वत के निकट पम्पासरोवर के पास मतंग मुनि का आश्रम था। ऋषि मतंग की शिष्या उस आश्रम की सेविका थी। आश्रम का वातावरण शान्त तथा मनमोहक होने के कारण वहां के ऋषि–मुनि सदा आनन्दित रहते थे। इसी आश्रम में रामभक्त शबरी रहती थी –

> क्षणात्रिधूर्यसैकलमविद्याकृत बन्धनम्।
> रामप्रसादाच्छबरी मोक्षं प्रापातिदुर्लभम्।।[12]

जिसनेश्रीराम की कृपा से अति दुर्लभ मोक्ष पद को प्राप्त किया था।

तृणबिन्दु आश्रम

महातेजस्वी महर्षि तृणबिन्दु का आश्रम सुमेरू पर्वत के पास था। जहां पर वे नित्य जप–तप किया करते थे–

> तत्राश्रमे महारम्ये देवगन्धर्वकन्यकाः।
> गायन्त्यो ननृतुस्तत्र हसन्त्यो वादयन्ति च।।[13]

उस महारमणीय आश्रम में देवता और गन्धर्वों की सुन्दरी कन्यायें हॅसती, गाती, नाचती, और बजाती हुई विचरण किया करती थीं। इसी पवित्र और सुन्दर आश्रम में ब्रह्माजी के पुत्र महामति पुलस्त्य तप किया करते थे। महर्षि पुलस्त्य का विवाह ऋषि तृणबिन्दु की अत्यन्त सुन्दर पुत्री से हुआ। जिसने त्रिलोक विख्यात पुत्र को जन्म दिया, जो ब्रह्मवेत्ता मुनिवर विश्रवा के नाम से प्रसिद्ध हुए।

च्यवन आश्रम

अध्यात्म रामायण के उत्तरकाण्ड के छठवें सर्ग में महर्षि च्यवन का वर्णन है। महर्षि च्यवन का आश्रम यमुना के तट पर था। जहाँ पर ऋषि तपस्या आदि किया करते थे। एक दिन यमुना तट पर रहने वाले समस्त मुनिजनलवणासुर से भयभीत होकर श्रीराम का दर्शन करने अयोध्या पहुँचे। वे अगणित मुनिगण भृगुपुत्र मुनिश्रेष्ठ च्यवन के साथ श्रीराम से अभय–लाभ प्राप्त करने की इच्छा से अयोध्या आये थे।[14]

संदर्भ

1. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस गोरखपरु प्रकाशन श्लोक 60/पृष्ठ संख्या 21श्रैठछ81–293–0014–1अ. रा.बा.कां.3ध्60
2. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 7/पृष्ठ संख्या 22 अ.रा.बा.कां 4/7
3. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन श्लोक25 पृष्ठ सं. 24 अ.रा.बा.कां. 5/25
4. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 15/पृष्ठ संख्या 25 अ.रा.बा.कां. 5/15
5. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 41/पृष्ठ सं. 72 अ.रा.अयो.कां 6/41
6. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 44/पृष्ठ सं. 73 अ.रा.अयो.कां 6/44
7. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन प्रकाशन श्लोक 79/पृष्ठ 97 अ.रा.अयो.कां 9/79
8. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन प्रकाशन श्लोक 1/पृष्ठ–103 अ.रा.अ.कां. 2/1
9. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन प्रकाशन श्लोक 25/पृष्ठ 105 अ.रा.अ.कां 2/25
10. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन प्रकाशन श्लोक 1/पृष्ठ 107
    अथ राम सुतीक्ष्णेण जानक्या लक्ष्मणेनच।
    अगस्त्यानुजस्थानं मध्यान्हे समपद्यत्।।
    अ.रा.अ.कां. 3/1
11. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन श्लोक3–4/पृष्ठ सं. 107 अ.रा.अ.कां3/3–4
12. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन श्लोक41/पृष्ठ सं. 143 अ.रा.अ.कां. 10/41
13. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन श्लोक27/पृ.सं. 311 अ.रा.उ.का. 1/27
14. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 2/पृ.सं. 338
    कृत्वाग्रे तु मुनिश्रेष्ठं भार्गवं च्यवनं द्विजाः।
    असंख्याताः समायाता रामादभयकांक्षिणः।।
    अ.रा.उ.कां. 6/2